

Christmas Puja

| | | |
|-----------------|---|--------------------|
| Date | : | 25th December 2000 |
| Place | : | Ganapatipule |
| Type | : | Puja |
| Speech Language | : | Hindi & English |

CONTENTS

I Transcript

| | |
|---------|---------|
| Hindi | 02 - 05 |
| English | 12 - 14 |
| Marathi | - |

II Translation

| | |
|---------|---------|
| English | 15 - 17 |
| Hindi | 06 - 11 |
| Marathi | 18 - 20 |

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आज का शुभ दिवस है जो मनाया जाता है। कारण, ईसामसीह का जन्म कहते हैं कि आज हुआ था। ईसामसीह के बारे में लोग बहुत कम जानते हैं क्योंकि वो छोटी ही उम्र में बाहर चले गए थे और उसके बाद वापिस आकर के उन्होंने जो महान कार्य किए वो सिर्फ तैंतीस (33) वर्ष के उम्र तक ही थे। उसके बाद उनके जो शिष्य थे, बारह उन्होंने धर्म का प्रचार किया लेकिन जैसे आप लोगों को भी समस्याएं आती हैं उसी प्रकार उनको भी अनेक समस्याएं आईं। पर इन बारह आदमियों ने बहुत कार्य किया और शुरूआत के जो लोग इनको मानते थे उनको ग्नोस्टिक (Gnostics) कहते थे। ग्नोस्टिक माने 'जिन्होंने जाना है'। 'जन्म' से आता है ग्नः, ग्नः माने जानना। और इन लोगों को भी बहुत सताया गया, इस वक्त के जो प्रीस्ट (priest) वगैरह लोग थे उन्होंने बहुत सताया।

इसलिए शुरूआत में बड़ी तकलीफ से ईसामसीह की बातें लोगों में भर दी गई। फिर जो उस वक्त सबको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ था और ईसामसीह ने

बार-बार कहा है कि 'अपने को जानो-अपने को जानो'। यह कहते हुए भी लोगों ने इस चीज़ का महत्व नहीं समझा और धर्म फैलाना शुरू कर दिया। अपने को जाने बगैर धर्म फैल नहीं सकता, धीरे-धीरे वो अधर्म हो जाता है और यही बात ईसाई धर्म की हो गई। जैसे कि ईसामसीह एक विवाहोत्सव में गए थे, शादी में गए थे और वहाँ पानी में हाथ डाल के उन्होंने उसकी शराब बना दी ऐसा लिखा हुआ है। हिब्रु में कहा जाता है जिसमें कि यह बात लिखी गई है शुरूआत में, कि वो पानी जो था उसका परिवर्तन जो हुआ सो जैसे कि अंगूर का रस। इस तरह उसका स्वाद था और अंगूर के रस को भी उसमें वाइन (wine) नहीं कहते। इसी बात को लेकर के ईसाईयों ने कहा कि चलो यह तो हमको मना नहीं है, शराब पीनी चाहिए और इस तरह से ईसाईयों में शराब बहुत चल पड़ी। शराब अधर्म लाती है, शराब से मनुष्य विचलित हो जाता है ऐसी बात कैसे ईसामसीह कहते? यह तो बहुत आसान चीज़ है, हम भी कर सकते हैं, पानी में हाथ डालकर के हो सकता है कि उसका स्वाद बदल दें। लेकिन इतनी लोग शराब पीने

लग गए, हम तो हैरान हैं! इंग्लैंड में हम गए थे तो वहाँ तो कोई मरता था तो भी बैठ कर शराब, कोई पैदा होता था तो भी शराब, बात-बात में शराब और इतनी शराब चल पड़ी कि अब शराब के सिवा बात ही नहीं करते। किसी के घर जाइए तो पहले वो शराब देंगे, अगर आप शराब नहीं पीते तो वो समझ नहीं सकते कि आपसे बात क्या करें। इस प्रकार इसका प्रचलन गलत चल पड़ा और अगर कोई कहे कि ईसामसीह ने ऐसा किया तो इससे बढ़ के गलत बात और कोई हो नहीं सकती। कभी भी कोई भी अवतरण आते हैं वो कभी भी आपको ऐसी बात नहीं सिखाएंगे कि जो आपके धर्म के विरोध में है। अब वो शराब का प्रचलन बढ़ते-बढ़ते हिन्दुस्तान में भी आ गया। जब हम लोग छोटे थे तो यहाँ अंग्रेजों का राज था, कोई हिन्दुस्तानी लोग शराब नहीं पीते थे, जहाँ तक हम जानते हैं। हाँ कोई कोई रईस लोग पीते होंगे, लेकिन कोई नहीं पीता था और अब जिसको देखो वो ही शराब पी रहे हैं और शराब में कितनी दुर्दशा होती है वो कोई जानता ही नहीं है और सोचता नहीं है और गलत काम करते हैं।

तो पहली चीज़ भई बताना चाहती हूँ कि जो यह ईसाई लोग शराब पीते हैं तो बड़ा धार्मिक कार्य नहीं करते हैं। यहाँ तक कि इनके रोम में जो चर्च है वहाँ एक शराब बनाते हैं। धर्म से अधर्म करना, धर्म

के नाम पर अधर्म करना मैं सोचती हूँ महापाप है और इस प्रकार सब गलत-गलत बातों को लोग अपना लेते हैं। उनके जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य था कि आपके अन्दर जो आज्ञा चक्र है उसका भेदन करें और इसलिए उन्होंने अपने को क्रॉस (cross) पर टाँग दिया और फिर उसके बाद फिर से जीवित हो गए। यह चमत्कार लगता है लेकिन परमेश्वरी कार्य को चमत्कार कोई चीज़ नहीं। यह उन्होंने दिखाया कि इन्सान इस आज्ञा चक्र से बाहर जा सकता है और आज्ञा चक्र पे इन्होंने दो मन्त्र बताए हैं इसे हम बीज मन्त्र कहते हैं 'हँ और क्षम्'। क्षम् का मतलब है क्षमा करो। क्षमा करना, यह सबसे बड़ा मन्त्र है। जो आदमी क्षमा करना जानता है उसका ईगो (Ego) जो है या उसका जो अहंकार है वो नष्ट हो जाता है। छोटी-छोटी बात में आदमी में अहंकार होता है जैसे किसी से कह दिया भाई तुम बैठ जाओ ज़मीन पर तो उनका अहंकार हो गया, अगर कहा कुर्सी पर बैठो तो कहेंगे कि यह छोटी कुर्सी है हमको क्यों दी? हर एक मामले में मनुष्य को अपने बारे में बड़ी कल्पनाएं होती हैं और वो कोई ज़रा सा कल्पना से कम चीज़ किसी ने की कि उसका अहंकार एक दम खड़ा हो जाता है। कभी-कभी अन्जाने में भी ऐसी बात हो सकती है और अन्जाने में भी कोई आदमी कुछ ऐसी बात करे तो जो आदमी अहंकारी होता है उसको हर एक चीज़ में लगता है कि उसका अपमान हो रहा है। इस तरह

से वो हर समय एक अजीब सी हालत में रहता है कि कोई भी उसके लिए करो काम तो सोचता है कि उसका अपमान हो रहा है, उसको नीचा दिखाया जा रहा है यह दिमाग में बात बैठी रहती है और फिर आप सीधी भी बात करो, चाहे नहीं भी करो सबका एक ही अर्थ निकलता है।

इसलिए देखना चाहिए और सोचना यह चाहिए कि जो ईसामसीह ने कहा है कि आपको अगर किसी के लिए भी ऐसा लगा कि उसने आपका अपमान किया या उसने आपको दुख दिया, तकलीफ दी तो उसे आप क्षमा कर दो। अब देखिए अगर आप सबको क्षमा कर दें तो क्या हो जाएगा? आपको कोई तकलीफ नहीं हो सकती, आप परेशान नहीं हो सकते। जब आपने क्षमा ही कर दिया तो उस बारे में आप सोचेंगे ही नहीं और कोई ऐसी घटना हो ही नहीं सकती कि जो आपके विपरीत हो क्योंकि आप सबको क्षमा करते रहते हैं। यह शक्ति हमें आज्ञा चक्र से मिलती है। जिसका आज्ञा चक्र अच्छा होता है वो सबको क्षमा कर देता है और नहीं तो दूसरा मार्ग क्या? अगर आप क्षमा नहीं करेंगे तो आप अपने ही को तकलीफ देंगे, अपने ही को परेशान करेंगे और जो दूसरा आदमी है वो हो सकता है उसने जान बूझ कर आपका अपमान किया है तो वो और बलवत्तर हो जाएगा। इसलिए क्षमा करना उन्होंने बड़ा भारी एक बड़ा भारी सन्देश मानव जाती के

लिए दिया है। और दूसरा हैं-हैं जो है यह 'क्षम' से बिल्कुल उलटा अर्थ रखता है। हम माने यह जान लो तुम क्या हो। यह जान लो कि तुम आत्मा हो, तुम यह शरीर, बुद्धि, मन, अहंकार आदि उपाधियाँ नहीं पर तुम आत्मा हो और इस 'हैं' को जानकर के आप समझ लोगे कि मैं आत्मा हूँ।

आत्मा का मतलब यह है कि कितनी भी गलत-सलत बातें हमारे दिमाग में घमंड से, गर्व से, मूर्खता से, अज्ञान से आई हुई हैं यह सब बेकार हैं, इनका कोई अर्थ नहीं बनता। तुम साक्षात् जब स्वच्छ आत्मा हो तो इस आत्मा में यह सब चीज़ आती नहीं और तुम अत्यन्त पवित्र हो। सो दो चीज़ें उन्होंने बताई एक तो यह कि आप सबको क्षमा कर दो। कोई ज्ञान से, अज्ञान से कुछ भी कुछ कहे क्षमा कर दो जिससे आप को तकलीफ नहीं होगी क्योंकि क्षमा करिये न करिये आप करते क्या हैं? कुछ भी नहीं। पर जब आप क्षमा नहीं करते हैं तब आप अपने को सताते हैं और तंग करते हैं और जिस आदमी ने आपको दुख दिया, तकलीफ दी वो तो मज़े में बैठा है। तो इस तरह से आप देखें कि कोई ऐसी बात हो उसे आप क्षमा करने की आदत डाल लें।

दूसरी बात जो कही है उन्होंने कि तुम आत्मा हो, इस आत्मा को जानो। आत्मा को तो कोई छू नहीं सकता, नष्ट नहीं कर

सकता, उसको सता नहीं सकता। अगर आप वो आत्मा स्वरूप हैं तो उसमें पूर्णतया समविलीन होना चाहिए। लेकिन इस आत्मा तत्व को प्राप्त करने के लिए आप जानते हैं कि कुण्डलिनी का जागरण होना ज़रूरी है और कुण्डलिनी के जागरण के बाद उसमें स्थित होना पड़ता है, उसमें बैठना पड़ता है। जब तक आप उसमें स्थित नहीं होंगे तब तक आप छोटी-छोटी बातों में उलझे रहेंगे।

तो अपने में समाना आना चाहिए, अपने ही अन्दर समाना चाहिए। अपने अन्दर जब आप समाने लग जाएंगे तो आपके अन्दर एक नितान्त शान्ति प्राप्त होगी और आप विचलित नहीं होंगे। इस शान्ति के दायरे में जब आप रहेंगे तो आपको आश्चर्य होगा कि आप जो छोटी-छोटी चीज़ों के लिए हर समय परेशान रहते थे वो नहीं रहेंगे, आत्मा के आनन्द में आप डूबे रहेंगे। इस आत्मा को प्राप्त करने के लिए मैंने कहा कि कुण्डलिनी का जागरण अत्यावश्यक है उसके लिए, उसके बगैर हो नहीं सकता। पर होने पर भी, जागरण होने पर भी लोग

भटकते रहते हैं, तो भी वो गहन नहीं आते। तो केन्द्र बिन्दु अगर आपका आज्ञा है और उसके ओर लक्ष्य कर के अगर आप देखें तो आप समझ जाएंगे कि यह आज्ञा चक्र आपको घुमा रहा है। इस आज्ञा चक्र की वजह से आप चक्करों में पड़े हुए हैं, विचारों के चक्करों में पड़े हुए हैं, नाना तरह की उपाधियाँ इससे लग रही हैं। पर जब इस आज्ञा चक्र को आप लांघ जाएंगे, इससे परे आप चले जाएंगे तब आप में यह जो व्यथा है वो खत्म हो जाएगी। इसलिए आज्ञा चक्र का महात्म्य माना जाता है। यहाँ तक कि बाईबल (Bible) में लिखा हुआ है कि जो आदमी माथे पर टीका लगा कर आएगा वो बचेगा, लिखा है ऐसा। वो सहजयोगी होंगे और कौन होगा! काम तो प्रचण्ड है। वो बारह (12) आदमी थे, आप लोग हज़ारों हैं। लेकिन एक-एक आदमी ने वहाँ जो मेहनत की है उसके एक सहस्रांश भी आप लोगों ने नहीं की है, अन्यथा न जाने कहाँ से कहाँ यह कार्य फैल सकता! अब मेरे लिए तो यही एक आधार है कि आप लोग सहजयोग को बढ़ाएंगे और सारे विश्व में इसे फैलाएंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

मुझे खेद है कि मुझे हिन्दी भाषा में बोलना पड़ा क्योंकि यहाँ उपस्थित बहुत से लोग सिर्फ हिन्दी भाषा समझते हैं। मैं जब बाहर होती हूँ तो केवल अंग्रेजी बोलती हूँ, इसके अतिरिक्त कोई और भाषा नहीं। इसलिए कभी-कभी मुझे परिवर्तन की भी इच्छा होती है।

ईसा-मसीह के महान अवतरण के बारे में मैंने इन्हें बताया कि एक महान लक्ष्य लेकर वे पृथ्वी पर अवतरित हुए। वे आज्ञा चक्र को खोलना चाहते थे जो कि बहुत ही संकीर्ण है और इससे पूर्व ये कभी न खोला जा सका था। इस महान कार्य को करने के लिए उन्हें अपना जीवन बलिदान करना पड़ा। उनके इस बलिदान के कारण ही यह संकीर्ण चक्र खुल पाया। उन्हें इस बात का ज्ञान था। वो जानते थे कि घटनाक्रम ऐसे ही घटित होगा और उन्हें अपना बलिदान स्वीकार करना होगा। वे दिव्य पुरुष थे। ऐसा करने में उन्हें कोई समस्या न थी परन्तु उन्होंने सोचा कि ऐसा किए बिना यदि ये कार्य हो सके तो अच्छा है। परन्तु अन्ततः उन्हें अपना जीवन बलिदान करना

पड़ा और उस बलिदान में उन्होंने दर्शाया कि मनुष्य को यदि सांसारिक बनावटी जीवन से ऊपर उठना है तो उसे बलिदान करना पड़ेगा। क्या बलिदान करना पड़ेगा? आपको अपने षड्रिपु (काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, लोभ) बलिदान करने पड़ेंगे। परन्तु कुण्डलिनी की जागृति के साथ ये षड्रिपु छुट जाते हैं। ऐसा होना इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी कुण्डलिनी कितनी जागृत हुई। कुण्डलिनी यदि पूर्ण रूपेण उठ जाए तो, मैंने देखा है पहली बार में ही लोग पूर्ण साक्षात्कारी हो जाते हैं। ऐसे लोग बहुत कम हैं, परन्तु ऐसे लोग हैं।

परन्तु मुझे लगता है कि आपमें से अधिकतर लोगों के साथ कुछ न कुछ समस्याएं हैं और अधिकतर को आज्ञा चक्र की समस्या है। हमारा आज्ञा चक्र इसलिए बहुत अधिक चलता है क्योंकि हम सभी बाह्य वस्तुओं को देखकर प्रतिक्रिया के रूप में सोचते हैं, हर चीज़ के प्रति हम प्रतिक्रिया करते हैं। यहाँ मैं ये सारे लैम्प देख रही हूँ। इनके बारे में मैं प्रतिक्रिया कर सकती हूँ और पूछ सकती हूँ कि आप

लोग इन्हें कहाँ से लाए, इन पर कितना पैसा खर्च हुआ, वर्ष भर इनको कहाँ रखते हैं आदि—आदि? मैं प्रतिक्रिया कर सकती हूँ। यह प्रतिक्रिया हमारे अहं एवं बन्धनों के कारण होती है। अहंकारी लोग अत्यन्त संवेदनशील होते हैं। आप उन्हें यदि ऐसी चीज दें जो बहुत गरिमामय नहीं है तो उन्हें खेद होता है। किसी भी चीज के विषय में उनके हृदय को चोट पहुँचती है क्योंकि अपनी चेतना के कारण वे स्वयं को कुछ विशेष, कुछ ऊँचा मानते हैं। उनसे व्यवहार करते हुए हमें बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि यदि उन्हें ये महसूस हो जाए कि कोई उनका तनिक सा भी अपमान कर रहा है तो वे पूर्णतः क्षुब्ध हो जाते हैं। यह अहं की देन है। अहं आज्ञा चक्र की गतिविधि का एक भाग है। बन्धन (Conditioning) इसका दूसरा भाग है।

अब आपके साथ एक बन्धन है, जैसे आप भारतीय हैं तो आपका बन्धन ये है कि कोई यदि आपसे मिलने आए तो वह आपके चरण—स्पर्श करे। मान लो वो आपका सम्बन्धी है और आपके चरण नहीं छूता तो आप नाराज हो जाते हैं। इस प्रकार का कोई भी बन्धन आपके मन में ये विचार पैदा करता है कि आपको अपमानित किया जा रहा है, आपका सम्मान नहीं किया जा रहा और यह बात आपको बुरी लगती है। अहं की अन्य प्रतिक्रियाएं जैसे मैंने बताया

इस प्रकार होती है जैसे मैं ये लैम्प देखकर कह सकती हूँ कि मैं क्यों नहीं इन्हें ले सकती, या यदि ये मेरे पास हैं तो किसी और को मैं क्यों दूँ? या तो अहं की प्रतिक्रियाएं होती हैं या प्रतिअहं की। इन दोनों का समाप्त होना आवश्यक था और ये कार्य ईसामसीह के जीवन बलिदान द्वारा किया गया। ईसा मसीह दिव्य पुरुष थे और दिव्य पुरुष सागर की तरह होते हैं और सागर शून्य बिन्दू (0°) पर होता है। निम्नतम स्तर पर रहते हुए यह सारे कार्य करता है, बादलों का सृजन करता है, वर्षा बनाता है और वर्षा के पानी से जब सभी नदियाँ भर जाती हैं तो वे लौटकर समुद्र में आ जाती हैं क्योंकि समुद्र का स्तर निम्नतम होता है।

अतः विनम्रता सहजयोगी का एक मापदण्ड है। विनम्रता विहीन व्यक्ति को सहजयोगी नहीं कहा जा सकता। मैंने देखा है, सहजयोगी भी कभी—कभी बहुत क्रुद्ध हो जाते हैं, चिल्लाने लगते हैं, दुर्व्यवहार करने लगते हैं। ये व्यवहार दर्शाता है कि वे अभी तक सहजयोगी नहीं हैं और अभी उन्हें परिपक्व होना है। ये विनम्रता व्यक्ति को अधिक स्थायित्व देती है, मैं कहूँगी कि एक अधिक स्थायी अवस्था जिसके कारण आप प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, किसी भी चीज को देखकर आप प्रतिक्रिया करते हैं, परन्तु तब आप प्रतिक्रिया

नहीं करेंगे। वस्तु को केवल देखेंगे और इस प्रकार आपमें एक नई अवस्था, साक्षी अवस्था का उदय होगा। जब आप साक्षी बन जाएंगे तो केवल देखेंगे, प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, इसके विषय में सोचेंगे नहीं। तब आप वर्तमान में होंगे। वर्तमान में आप देखते हैं और वास्तव में आनन्द लेते हैं। सोचते हुए किसी भी कृति का आनन्द आपके मस्तिष्क में नहीं होता। परन्तु जब आप निर्विचार होते हैं तो उस कृति के सौन्दर्य का पूर्ण आनन्द आपमें प्रतिबिम्बित होता है और आपको अगाध शान्ति एवं आनन्द प्रदान करता है। अतः व्यक्ति को सीखना है कि उसे प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए।

आज की मुख्य समस्या ये है कि सभी मनुष्य प्रतिक्रिया करने में अत्यन्त कुशल हैं। प्रतिक्रिया करना आज के समाज का प्रमुख सिद्धान्त है। किसी भी समाचार पत्र या पुस्तक को आप उठाएं तो आपका सामना ऐसे लोगों से होगा जो प्रतिक्रिया करने में कुशल हैं, वे प्रतिक्रिया करते हैं और उस प्रतिक्रिया के कारण विषय के सार तत्व तक नहीं जा पाते। सार तत्व को तो केवल साक्षी अवस्था द्वारा ही पाया जा सकता है। ईसा-मसीह के बलिदान से हमें यही सीखना है। उनका जन्म एक अत्यन्त गरीब एवं विनम्र परिवार में बहुत ही कठिन परिस्थितियों में हुआ। लक्ष्य ये दर्शाना था कि बाह्य पदार्थ, बाह्य शानो-शौकत

व्यक्ति को महान नहीं बनाती। महानता तो अन्तर्निहित है और जब ये महानता अन्दर होती है तो आप बाह्य वस्तुओं की चिन्ता नहीं करते। तब आप अपने अन्दर इतने वैभवशाली हो चुके होते हैं कि आपको बाह्य चीजों की चिन्ता नहीं होती। बिना इन चीजों की चिन्ता किए आप गौरवमय जीवन व्यतीत करते हैं। ईसा मसीह के जीवन से भी हमें यही बात देखने को मिलती है। वे अत्यन्त गौरवशाली व्यक्ति थे अन्यथा कोई गरीब व्यक्ति तो, जिसने गरीबी का स्वाद चखा हो, भिखारियों की शैली में बात करेगा। यदि किसी धनवान परिवार में जन्में व्यक्ति से आप बात करेंगे तो वह अत्यन्त बाह्य दिखावे के स्वभाव से बातचीत करेगा। परन्तु दिव्य पुरुषों को ये सब चीजें छूती तक नहीं। उनके लिए अमीरी-गरीबी, उच्च पद या सत्ता का अभाव, सभी स्थितियाँ एक सम हैं। ऐसी स्थिति जब आपमें विकसित हो जाए तब आपको मानना चाहिए कि आप सहजयोगी बन गए हैं। मैंने देखा है कि गणपति पुले आने वाले लोग अब बहुत परिवर्तित हो गए हैं। आरम्भ में तो जब लोग वहाँ आते थे तो कहा करते थे हमें पानी नहीं मिलता, यहाँ फलों सुविधा नहीं मिलती, यहाँ गर्मी है या सर्दी है। हर समय वे ऐसे बात करते थे मानो छुट्टी बिताने के लिए आए हों। सहजयोग बिल्कुल भिन्न है। यहाँ पर आप अपनी साक्षी अवस्था विकसित करने के लिए हैं।

आपने आज आकाश को देखा यह कितना सुन्दर था! किस तरह नारंगी और नीले रंग आकाश में बिखरे हुए थे! स्वतः ही इसमें रंग उठते हैं और इनका यह आनन्द लेता है। इस बात की भी चिन्ता नहीं करता ये रंग सदैव बने रहने चाहिए। इस बात की भी इसे चिन्ता नहीं होती कि अंधेरा होते ही ये सब रंग समाप्त हो जाएंगे! ये मात्र देखता है। आकाश साक्षी रूप से देखता है और जो भी कुछ उसे उपलब्ध हो जाए उसे ले लेता है। यही कारण है कि यह इतना सुन्दर है और इतना आनन्ददायक।

तो एक अन्य बात ये है कि जब आप आध्यात्मिकता की उस अवस्था में होते हैं तो आप अत्यन्त शान्त एवं सुहृद होते हैं और परस्पर प्रेम करते हैं। अहं की सभी समस्याएं लुप्त हो जाती हैं। मेरे विचार से अहं ही आपके जीवन के सारे वैभव एवं सौन्दर्य को बाधित करता है। आप यदि इस अहं को मात्र देख सकें कि यह किस प्रकार कार्य करता है तो आप आनन्द में आ जाएंगे। यह एक प्रकार का नाटक करता है। आप इस नाटक को देख सकते हैं। साक्षी रूप से देखने पर लोग अचानक समझ जाते हैं कि आप इस अहं में फँसे हुए नहीं हैं, आप तो मात्र इसे देख रहे हैं। अपने अहं से जब आप निर्लिप्त होते हैं तो आप इस बात को देख पाते हैं

कि किस प्रकार ये आपको अपने जाल में फँसाने का प्रयत्न करता है। आज के युग की यही समस्या है और इसीलिए हमें आज ईसामसीह की अत्यन्त आवश्यकता है।

आज की समस्या ये है कि लोग इस बात को नहीं समझते कि अहंवादी बनकर वे स्वयं को, अन्य लोगों को पूरे, विश्व को कितनी हानि पहुँचा रहे हैं। यदि वो इस बात को समझ लें तो, मैं आपको बताती हूँ कि, वो इसे त्याग देंगे। परन्तु समस्या ये है कि लोग इसका आनन्द लेते हैं! इस प्रकार की तुच्छता या अधम जीवन का आनन्द लेते हैं! आप सब लोग सहजयोगी हैं, आपको ये समझना चाहिए कि ये अहं मेरी खोपड़ी पर क्यों सवार हो रहा है? मैंने ऐसा क्या किया है? मैं कौन हूँ? एक बार जब इस प्रकार के प्रश्न पूछने लगते हैं तो ये अहं लुप्त हो जाता है। अहंकारी लोगों से व्यवहार करना मेरे लिए भी बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि मैं उन्हें बता नहीं पाती कि तुम्हारे अन्दर अहं है। ये बात यदि मैं उन्हें बता दूँ तो वे दौड़ जाएंगे। यदि मैं उन्हें ये कहूँ कि तुम ठीक हो, बहुत अच्छे हो, बहुत भले हो, तो उनका अहं और अधिक बढ़ जाएगा और वे कहेंगे ओह! श्रीमाताजी ने मुझे कहा है मैं बहुत अच्छा हूँ ये बहुत बड़ी समस्या है। मेरी समझ में नहीं आता कि मनुष्य के अहं को किस प्रकार ठीक करुं! मैं जानती हूँ उनमें अहं है परन्तु ये नहीं जानती किस प्रकार व्यवहार किया जाए। यदि आप ये

बात समझ लें कि आपमें क्या दोष है तो मैं सोचती हूँ कि आप इस कार्य को कर सकते हैं। आपकी अपनी तथा मेरी समस्या को सुलझाने का यह अत्यन्त उत्तम उपाय है।

मेरा स्वप्न इतना महान है कि इसे एक जीवन में पूरा नहीं किया जा सकता। मैं चाहती हूँ कि विश्व के सभी लोग आत्मसाक्षात्कार पा लें। जिस प्रकार सहज संस्कृति में हमने अहं से मुक्ति प्राप्त करने का प्रशिक्षण पाया है यह अत्यन्त प्रशंसनीय है। आप स्वयं अन्तर्बलोकन कर सकते हैं, स्वयं। आप देख सकते हैं कि आपका आचरण ऐसा क्यों है। जिस प्रकार सहजयोगी अन्तर्बलोकन कर सकते हैं वैसे अन्य नहीं कर सकते। क्योंकि सहजयोगी अपनी गहनता में पेंठ सकता है, वे स्वयं, स्वयं को देख सकते हैं, वे अन्य लोगों को देख सकते हैं और इस प्रकार वो ये देखने का प्रयत्न कर सकते हैं कि ये श्रीमान अहं आपकी खोपड़ी में क्या कर रहे हैं? निःसन्देह हम ये भी जानते हैं कि ईसामसीह का मंत्र अहंकार की बाधा को दूर करने का सर्वोत्तम उपाय है, ये हमारी बहुत सहायता करता है। परन्तु ये मन्त्र लेते हुए आपको अत्यन्त विनम्र अवस्था में होना चाहिए। आखिरकार मैं हूँ कौन? इतने सारे सितारों और सुन्दर वस्तुओं को देखने वाला 'मैं' कौन हूँ? मैंने क्या किया है? क्यों मुझे इतना अहंकारी

होना चाहिए? मुझे ये क्यों सोचना चाहिए कि मैं बहुत महान हूँ? अन्य लोग भी आपके अहं को बढ़ावा देते हैं क्योंकि वे आपसे लाभ उठाना चाहते हैं। वो आपके अहं को बढ़ावा देंगे, कहेंगे कि ये बहुत महान बात है, आप बहुत महान हैं, और आप उन्मत्त हो जाएंगे मानो आपको मूसलधार वर्षा में फँक दिया गया हो, और अहंकारग्रस्त लोगों की बाढ़ की तरह से आप पनप उठते हैं। अपने इर्द-गिर्द यदि आप देखें तो आधुनिक काल में सभी लोग अपने अहं के प्रति अत्यन्त सजग हैं। जिस प्रकार उनके नाम समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में आते हैं मुझे आश्चर्य होता है। वहाँ मेरा नाम यदि छपता तो मुझे लज्जा आती क्योंकि यह मात्र आपके अहंकार की अभिव्यक्ति है और कुछ भी नहीं। लोग भिन्न प्रकार के कार्य आरम्भ करते हैं, ये उनके अहं की स्पर्धा है। बहुत प्रकार की स्पर्धाएं हैं जैसे सौन्दर्य स्पर्धा, मिस्टर इंडिया स्पर्धा आदि। ये सभी चीजें व्यक्ति के अहं को बढ़ावा देती हैं और लोग इन स्पर्धाओं के पीछे दौड़ते रहते हैं। वो सोचते हैं 'क्यों न मैं भी ऐसा ही बनूँ?' तो ये सभी चीजें मृतपर्याय करने वाली हैं और आपके मस्तिष्क को पूरी तरह से ढक लेती हैं और आप सोचते हैं कि सफलता प्राप्त करने का यही तरीका है। इस प्रकार की सफलता अधिक समय तक नहीं चलती। शीघ्र ही समाप्त हो जाती है।

सहजयोग में प्राप्त की गई सफलता शाश्वत होती है। जिस व्यक्ति में इस प्रकार का विनम्र स्वभाव है उसे पीढ़ियों तक याद किया जाएगा। किसी अहंकारी व्यक्ति का पुतला मैंने कहीं लगा हुआ नहीं देखा। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति अहंकारी था तो लोगों ने उसे विशेष रूप से अहंकारी कहा। अब भी ये बात असम्भव है कि किसी अहंकारी व्यक्ति की प्रशंसा में गीत गाए जाएं या उसका पुतला लगाया जाए।

तो अपने हृदय में हम विनम्र लोगों को पसन्द करते हैं और यदि हम चाहते हैं कि अन्य लोग भी हमें पसन्द करें तो हमें भी विनम्र होना चाहिए। दिखावे के तौर पर नहीं, वास्तव में, ये समझकर की हम क्या हैं, हमें गर्व क्यों होना चाहिए, अन्य लोगों पर क्यों हमें प्रभुत्व जमाना चाहिए और उन्हें कष्ट देना चाहिए। आप यदि ये बात समझ लें तो आपने ईसामसीह के महान अवतरण के प्रति न्याय किया है। उन्होंने अपने बहुत से गुणों की अभिव्यक्ति की परन्तु अपने जीवन का बलिदान करके अहं चक्र का भेदन ही उनका महानतम संदेश है और ये बात हमें समझनी चाहिए। अपने आपको इसाई कहने वाले सबसे अधिक अहंकारी हैं। मैं हैरान थी कि इंग्लैण्ड में अंग्रेज लोग अत्यन्त अहंकारी हैं। पश्चिम के अन्य देशों में भी मैंने देखा है कि लोग अहंकारवादी हैं। भारतीयों के मुकाबले उनमें विनम्रता का पूर्ण अभाव है और वे अत्यन्त अहंकारी हैं क्यों? क्योंकि वे ईसा-मसीह

का अनुसरण करते हैं? क्या इस बात की कल्पना आप कर सकते हैं? ईसामसीह का अनुसरण करने का क्या यही तरीका है? स्वयं को ईसाई कहलाने वाले और स्वयं को ईसामसीह का अनुयायी बताने वाले लोगों को अपने जीवन में ईसामसीह की वह विनम्रता, करुणा व प्रेम दर्शाने चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं है।

अतः पश्चिमी देशों से आए हुए आप सभी लोग सहजसंस्कृति को सीखने का प्रयत्न करें। सहज संस्कृति में हम किस प्रकार बात करते हैं, किस प्रकार रहते हैं, किस प्रकार एक दूसरे से सम्पर्क करते हैं? यह एकदम भिन्न है। एक बार जब आप सहज संस्कृति को अपने जीवन में उतार लेंगे तो, आप हैरान होंगे कि, आपके पारस्परिक तालमेल को देखकर अन्य लोग भी दंग रह जाएंगे कि किस प्रकार आप हर चीज की कितनी अच्छी तरह से देखभाल करते हैं!

सहजयोगियों के रूप में इस संसार में रहना सर्वोत्तम है। यहाँ न अहं है न बन्धन। ऐसा कुछ भी नहीं है। इन सभी दुर्गणों से आप पूर्णतः मुक्त हैं। तब आप हैरान होंगे कि लोग किस प्रकार आप पर विश्वास करते हैं, किस प्रकार आपको चाहते हैं। आप सब लोगों को मैं ईसामसीह के जन्मदिवस पर शुभकामनाएं देती हूँ और आशा करती हूँ कि आप ईसामसीह के सन्देश और उनके जीवन को सदैव याद रखेंगे।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

I'm sorry I had to speak in Hindi language, because most of the people who are here are understanding Hindi only. When I am abroad, all the time I am speaking English, nothing else but English language, and then I want to have some change for a while.

Regarding today's great advent of Shri Jesus Christ, I told them that He came on this earth with a very great mission, I would say one of the greatest missions, because He wanted to open the Agnya chakra which was so constricted, and could not be done before. For that He had to sacrifice His life, by that sacrifice only the great Agnya could be opened. He was aware of it, He knew that it has to happen, that He has to somehow accept this sacrifice. As it is, He was a Divine personality, He had no problem in doing so, but He thought that, could be some other way there, by which you can open this Agnya chakra.

But He had to sacrifice His life and in that sacrifice He has shown that if you have to rise above this mundane, superficial life, you have to, in a way, sacrifice. Sacrifice what? Sacrifice all your six enemies. But with the Kundalini awakening all these six enemies completely get detached. Depends on how your Kundalini has risen. If she has risen in a perfect manner, then I have seen people at the first shot, they just become completely self-realised people. Of course there are very few but there have been.

While I see most of you have little problems, and for most of you it is the problem of the agnya chakra. How do we get the Agnya chakra working so much is this, that we think as a reaction, as a reaction, to anything outside, we react to everything. I see here all these lamps, I can react by saying "From where did they get all these? How much it must have cost? Where are they kept all the year round?" All kinds of things. I can react. This reaction comes from our conditioning, or from our ego.

Egoistical people are extremely sensitive. If you give them, say, something that they think is not very dignified they can feel hurt. They can feel hurt for anything, because they have a consciousness that they are something special, something higher people, and one should behave with them when they are dealing with anyone, and that's how they get absolutely disturbed if they find anybody, in any way, degrading them. This comes from ego. Ego is a part and parcel of this agnya movement and the second one is your conditioning.

Now you have a conditioning, say you are an Indian, now the conditioning is that a person who comes to meet you should touch your feet, supposing, that's your relationship, and the person doesn't touch your feet then you are angry. Anything like that which is your conditioning, gives you an idea that you are being insulted, or in any way you have not been respected, then you feel bad. The other reactions of ego are like this, as I said, I see those lamps and I can say "Why not I have it?" or "If I have them why will I give it to anyone?" Ego reactions are there, or conditioning reactions are there.

These two were to be finished and that was done by the sacrifice of the life of Christ. Christ himself was a Divine person and a Divine person is like the sea, because it remains at the zero point, at the lowest point. It does all work from that point. It will make clouds, it will make rain, and when all the rivers are in spate they'll run into the sea. Because the sea remains at the lower point.

So humility is the, one of the criteria of a Sahaja Yogi. A person who doesn't have humility cannot be called a Sahaja Yogi. I have seen even sahaja yogis get very angry, sometimes start shouting and getting angry and misbehaving. That's the sign that he is not yet a Sahaja Yogi, he has to still mature. So this humility of a person will give you a more stationary, I would say, more permanent state by which you will not react, you will not react. You look at anything you react, but then you don't react,

you just watch, and that is how the new state of witness state comes into you, when you become the witness, you're just watching, just watching, not reacting, not thinking about it, but you are in the present and in the present you just watch, watch and really enjoy. The enjoyment of all the creation is not within your mind when you are thinking, and when you are not thinking the whole enjoyment of the beauty of all this creation reflects in you and gives you tremendous joy and peace.

So one has to learn that we should not react. But today's problem is all human beings are very good at reacting. Reaction is the basic principle of today's life. (break in talk for 3 secs) You see any newspaper, you see any book, you meet anyone, what I find that they are experts on reacting. They react, and by reaction what happens they never achieve any essence of the thing. Essence is only through witness state that you can achieve it. This is what we have to learn from the crucifixion of Christ, from His birth, that He was born in a very humble family, very poor family, in very adverse conditions. The reason was to show that all these outward things and all these outward glories do not make you great. The greatness is within and when that greatness is there, then you don't care for it, because you are so much enriched within yourself, that you don't bother about other things, you don't think about these things, and you live in your own majestic life. This is what we see in His life, He was a very Majestic person.

Otherwise if you meet somebody who is a poor man, say, and who has felt the poverty, He will talk to you with a beggarish style. If there's somebody who is born in a rich family, He will talk to you in a very, I should say, outward, outwardly showing off nature. But a person who is a Divine person, all these things don't touch. For him, riches or not riches, positions or no power, is all just the same, and when that happens then you should consider that you have become sahaja yogis.

I've seen people who come to Ganapatipule, now they are very much changed, otherwise in the beginning they used to say, "We don't have water, we don't have this facility, it's very cold or hot...", whatever it is. They were all the time talking as if they are on a holiday. It is something very different. You are here to develop your witness state.

Did you see the sky, how beautiful it was? How orange, blue, all kinds of colours were there. The colour it takes, automatically, and is enjoying it. It is not bothered that it should remain forever, that this will go away when there is darkness. Just watching! The sky is just watching. Whatever comes its way, it takes it. So, it's so beautiful and it's so joy-giving. So the another thing is that, when you are in that state of spirituality, then you are joy-giving, you are peace giving, you are compassionate and you love each other. All these problems of the ego just disappear. Ego is your greatest enemy I think, and it is the one that really hinders all the wealth and beauty of your life. So if you could just see this ego, how it works, just you'll be enjoying it. It's a drama it plays, alright? Let's have it! You can see the drama and then suddenly you will be amazed that you are not in it, you are watching it. When you are detached from your ego you can see how it tries to entice you.

These are the problems of today and that's why we need Jesus very much. The problem of today is, that people don't understand that how much harm they are doing to themselves, to others and to the whole world by becoming egoistical. If they could understand, I tell you, they would give up, but the problem is they enjoy that, they enjoy that kind of meanness, or I would say very low level living. While you are all sahaja yogis and what you have to do is to understand, "Why this ego is coming in my head? What have I done? Who am I?" Once you go on asking such questions, this ego will disappear.

And it's a great problem for me, also, to deal with people who have ego because I can't tell them "You have got ego", if I tell them they'll all run away. If I tell them "Alright, you are very good, you are very nice", then ego will be bloated. Then they say, "Oh, Mother told us I'm very nice". It's very problematical; I don't know how to deal with the ego of human beings. I know they have, but I don't know how to deal with it. I think it is only you can deal with it, if you'll understand what's wrong with you. That's a very good way of solving your problem and my problem also.

My vision is too great, I think, for one life, I want a global Realisation, I want people all over the world to have Realisation. It's very remarkable how, in Sahaj culture we have a proper training for getting rid of ego. You can, yourself, introspect yourself. You can yourself see why you behave like this. The introspection that sahaja yogis can do cannot be done by other people, because they can enter into themselves, they can see for themselves, they can watch others, and with that they can just try to see "What is this Mr Ego doing?" within your head.

Of course we know that the mantra of Christ is the best for removing all egoistical problems, and that helps a lot, but also when you are doing this mantra you should be yourself in a very humble state. "What am I, after all, who am I? Look at so many stars, look at so many beautiful things, and who am I? What have I done? Why should I be so egoistical? Why should I think I am something great?" and also other people pamper you, because they want to take advantage of you. So they'll pamper you, they'll say "This is very great, you are very great" and you just get enamoured, get lost. You are like thrown into the torrential rain and you flood out into a big, I think, like a big stream of egoistical people. And if you see around today, in these modern times, everybody is conscious of their ego, very ego conscious, and the way they are coming up in the newspapers, or the way they are in some magazines I am quite amazed. I would feel shy to be there, because it's so much of expression of your ego, nothing else. All kinds of things they start, they have competition of ego, lots of competition. Like they have a beauty competition, then they have another competition for Mr...., you can say, India, Mr. this thing, that, all these things actually give the person ego and others also run after such competitions. They think, "Why am I not? I should be like that".

So it's very deadening, and absolutely blinds your mind that you think this is the way one has to be very successful. This success lasts for how long? It perishes in no time, but success in Sahaja Yoga is what will last forever and everybody will remember it. The one who has this kind of a humble nature will be remembered for generations. I've never seen a statue of a person who has been egoistical. On the contrary, if there was some they used to criticise, "He was a very egoistical man". And nowadays it is impossible, anybody who has ego, I don't think anybody is going to sing any songs about such a person, or going to raise any statues in their name. So in the heart of hearts, we like humble people, and if we want others to like us, we should be also very humble. Not artificially, but really, by understanding that "What are we? Why should we (be) proud? Why should we try to overpower others and trouble others?" If you understand that, you have done full justification to the incarnation of Jesus Christ the Great.

There are so many qualities He has shown, but the, for us, the best is His passing through the ego, sacrificing His life, is the greatest message, and for that we have to understand, but those who call themselves (christians) are the most egoistical. I was surprised that England, English people are extremely egoistical, or otherwise other countries also I have seen in the west, they are very egoistical. They have no humility at all compared to Indians. They are very, very egoistical people. Why? Because they are following Christ, can you imagine! Is this the way we follow Christ? Those who call themselves Christians, and those who call themselves very great admirers of Christ should show in their life that humility, that compassion, that love, it is not so.

So specially for people who are from Western countries, you must try to learn Sahaj culture. In a sahaj culture, how do we talk, how do we live, how do we contact, it is something very different. And then once you start Sahaj culture in your life, you'll be amazed, others will be amazed, how you are having rapport with each other, how you are looking after everything so well. This is the best way to live in this world as sahaja yogis, where there is no ego, there is no conditioning, nothing. You are just absolutely free from all these horrible attributes and then you will be amazed how people will trust you, how they will like you. I wish you all a very Happy Christmas (applause) and also remember the message of Christ and His life.

May God Bless You.

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

The reason for celebrating this auspicious day is the birth of the Christ. Very little is known about Jesus Christ because in young age he left his house and after returning he lived only up to the age of thirty year. But during this short period he did tremendous work. After his death, his twelve disciples spread Christianity. They also faced problems as you have to face sometimes. But these twelve disciples did tremendous work. Their followers, in the beginning, were known as Gnostics, meaning 'Those who have known'. The origin of this word is from 'Gna' meaning 'To Know'. These people were harassed and tortured by the priests of that time. So in the beginning it was very difficult to convince people of Christ's thoughts. People were not self realised. Jesus Christ had said it again and again 'Know Thyself', 'Know Thyself'. Without realising the significance of self realisation people started spreading the religion. Without knowing the Self, religion could not be spread because gradually such religion becomes Adharmas. Same thing happened with Christian religion. It is written that Jesus Christ went to a wedding party. There he put his finger in the water and converted it in to wine. It is written in Hebrew language that

the taste of this water changed in to that of the wine. 'Wine' in Hebrew meaning the juice of the grapes. But Christian people twisted the meaning of the wine and took it for alcohol and Christians took to alcohol and accepted it in their religion. Alcohol is the cause of all Adharma, all sins. It gives human beings distracted attention. Its very easy to change the taste of the water. I may also do it by putting my hand in it. But people took so much to alcohol that I am astonished! In England, I saw, they drink alcohol. Whether some one is born or dies, you go to someone's house, immediately they offer you drink. Without drinking they do not know how to talk to you. Alcohol is so much prevalent. But it will be injustice to say that Jesus Christ advocated the drinking of Alcohol. None of the incarnations could tell to go against religion. In India also the use of alcohol has become prevalent. When we were young during the time of British rule, Indians were not used to drinking. May be that alcohol was consumed by some highly placed people, otherwise it was not used. Now even common men could be seen drinking. No one thinks of the miserable state alcohol drags the person in. Drunkards, then commit sins.

The first thing I want to tell you is that the drinking by the Christians is not a religious activity. Alcohol is made in the Church of Rome. To commit sins (Adharma) in the name of religion (Dharma)! It is unpardonable sin. That is how people accept all the evils.

The aim of Jesus Christ was to open the centre of your Agnya and to achieve that purpose He got Himself crucified and then He resurrected. It appears to be a miracle but for the Divinity there is no miracle as such. He proved that human beings could rise above the centre of Agnya and on this centre he told two mantras which we call Beej Mantras - 'Ham and Ksham'. 'Ksham' means to forgive. Ksham is the biggest mantra. The ego of the person who knows how to forgive, gets destroyed. One is proud of small-small things. For example if you tell someone to sit on the earth, his ego gets hurt. If some one is told to sit in the chair, he will reply, "This chair is very small, why have you given it to me?" Everyone has some expectation about him and if his expectations are not fulfilled, his ego immediately comes up. Unknowingly some times such things could be done but the egoistical people take it as their insult. Such people make their condition very miserable. All the time they think they are being insulted and humiliated. He is always obsessed with this thought and he draws negative meaning of

whatever is told to him. So we have to think of what Jesus Christ had thought. He said, "Forgive those who have tress passed against you". Now see the results if you forgive everyone. You will neither suffer nor get disturbed mentally. You will not think of the person whom you have forgiven. Nothing could go against you because you forgive everyone. We get this power from the centre of Agnya. The person whose Agnya is clear forgives everyone. If we donot forgive we torture ourselves and play in the hands of others, who assume power over us. 'Forgiveness' is the greatest message that Jesus Christ has given to mankind.

Second is 'Ham' It has altogether different meaning. Ham means 'To Know Thyself.' You have to know that you are the Spirit. You are not this body, mind, brain or ego. You are the Spirit. When you know this 'Ham' then it will be clear to you that you are the 'Atma'. The 'Spirit' means that all the ego, foolishness, ignorance that we have in our mind, are meaningless. All these negativities have absolutely no place in the Pure Spirit. You are very pure,

So he told two things, the first is 'To Forgive' everyone. Knowingly or unknowingly if someone troubles you, you should forgive him. You will not get tortured but if you donot forgive

then you torture yourself because another person is sitting nicely. So you must develop the habit of forgiveness.

Second thing that he told us is that 'You are the Spirit'. Know this Spirit, the Self. No one can touch the spirit, can destroy it, no one can torture it. If you are that spirit then you should be established in it. But to achieve this 'Atm- Tattva' the awakening of Kundalini is necessary. First is to work out the awakening of the Kundalini and then to get established in it. Untill you are established, you will remain entangled in stupidies. So one should know how to be established with in, to remain with in thyself. When you achieve this state, you will feel the extreme joy within and nothing will disturb you. When you get established in this aura of peace, then you will be surprised, you won't worry about small small things. You will be always drenched in the joy of Spirit.

To attain the Spirit, the awakening of kundalini is essential, Without attaining awakening this is impossible. But some of the awakened people also get confused. They do not go in depth. The central point is your Agnya. If you look at it then you will come to know that it is confusing you. Because of it you are entangled, caught in different thoughts and having different problems. But when you cross this centre of Agnya and go beyond it then

this problem will be over. That is why this centre is very significant. It is written in the Bible that those who apply vermilion on their forehead will be saved. They could be none else but Sahaja Yogis. Its a stupendous task. Jesus Christ had only twelve disciples, but you are thousands and thousands. Had you put one thousandth labour that they put, the spreading of Sahaja Yoga would have been much more. I depend upon you people. You are my sole support and I hope you will spread Sahaja Yoga in the whole world.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi & English Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

आजचा दिवस शुभ आहे. तो सर्वत्र साजरा होतो कारण हा इसा मसीहा ख्रिस्ताचा जन्मदिवस आहे. त्यांच्याविषयी लोकांना खूप कमी माहिती आहे. लहानपणीच ते घराबाहेर पडले होते. त्यांनी आपल्या वयाच्या ३३ वयापर्यंत जे कार्य केले ते अतिशय महान कार्य आहे. त्यानंतर त्यांचे जे १२ शिष्यगण होते त्यांनी धर्मप्रचाराचे कार्य केले तुम्हाला जसे समस्यांना सामोरे जावे लागले तसे त्यांनाही अनेक समस्या आल्यात. पण केवळ या १२ लोकांनी पुष्कळ कार्य केले लोक त्यांना 'नॉस्टिक्स' (gnostics) म्हणतात. 'ज्ञ' जाणणे यापासून नॉस्टिक्स शब्द झाला. ते बरेच काही जाणत होते. त्यावेळच्या धर्मगुरूंनी त्यांना बरेच छळले. ख्रिस्तांच्या शिकवणुकीचा प्रसार करण्यात फार अडथळे येत त्यावेळी लोक आत्मसाक्षात्कारी नव्हते. ख्रिस्त नेहमी सांगत 'स्व'ला जाणा 'स्वतः' जाणा याचे महत्त्व त्या शिष्यांना समजले नाही ते तसाच प्रचार करत राहिले त्यामुळे हळूहळू अधर्मच वाढत राहिला.

एकदा ते एका लग्नकार्यासाठी गेले होते. तेथे त्यांनी पाण्यात हात घालून एक पेय निर्माण केले त्याची चव द्राक्षाच्या रसासारखी होती. त्यालाच लोक मद्य समजले. म्हणून त्यांनी दारू पिण्यास सुरुवात केली लोक दारू पिऊ लागले. आम्ही इंग्लंडमध्ये होतो, तेथे सर्व कार्यक्रम ते लोक मद्य देऊ लागले, एकमेकांच्या घरी गेलात तरी मद्य पुढे करतात एवढा मद्याचा वापर होऊ लागला. या रितीला ख्रिस्तांचा संदर्भ जोडू लागले. कुठलाही धर्मपिता असली अधर्म असणारी गोष्ट लोकांना करायला लावेल का? भारतात पूर्वी लोक कधीही मद्य घेत नसत. पण इंग्रज आले त्यांनी मद्यही येथे आणले व तेव्हापासून लोक मद्य घेऊ लागले. आता तर बरेच मद्यपी झालेत. (ख्रिश्चन लोक मद्य घेणे म्हणजे धर्म समजतात) रोममध्ये चर्चमध्ये मद्य तयार करतात. असला अधर्म म्हणजे महापाप आहे लोक असल्या चुकीच्या गोष्टींना जवळ करू लागले. ख्रिस्तांच्या जीवनाचा एकच उद्देश होता, आता चक्राचे भेदन करणे, त्यांनी स्वतःला क्रॉसवर चढवून घेतले व पुन्हा जिवंत प्रकट झाले. हा काही चमत्कार नाही.

परमेश्वरी कार्याला कुठलाच चमत्कार नसतो.

अशारितीने त्यांनी दर्शविले की तुम्हा आज्ञाचक्राच्या बाहेर येता. आज्ञाचक्राचे दोन बीजमंत्र आहेत एक हं दुसरा क्षं. क्षं म्हणजे क्षमा. जो दुसऱ्याला क्षमा करतो, त्याचा अहंकार कमी होतो. अहंकारी माणसाला स्वतःविषयी काही दृढ समजुती असतात त्यांना धक्का पोहोचला की त्यांचा अहंकार चढतो. अपमान वाटतो त्यांची विचित्र स्थिती असते. इसा मसीहांनी सांगितले की कोणीही तुमचा अपमान केला, दुःख दिले तर आपण त्यांना क्षमा करा त्यामुळे काय घडते पहा. जेव्हा तुम्ही क्षमा करता तेव्हा ती घटना तुम्ही विसरून जाता नंतर तुम्हाला कसलाच त्रास होत नाही. त्याबाबत पुन्हा विचारही करणार नाही. ही शक्ती तुम्हाला आज्ञाचक्रामधून मिळते. ज्यांचे आज्ञाचक्र ठीक आहे ते क्षमा करणारच क्षमा करणे हा मोठा संदेश त्यांनी आपल्याला दिला आहे.

आता दुसरा बीजमंत्र हं आहे. तो बिलकूल क्षं च्या उलट आहे. तुम्ही कोण आहात हे आधी जाणा. तुम्ही मन बुद्धी चित्त अहंकार नाही. तुम्ही 'हं' म्हणजे आत्मा आहात. आमच्या आत गर्वामुळे, अहंपणातून अज्ञानाने व मुखपणातून जे चुकीचे भ्रम आहेत ते सर्व व्यर्थ आहेत. त्याला काही अर्थ नाही, हे जाणणे म्हणजेच आत्मतत्त्व. तुम्ही शुद्ध साक्षात आत्मा आहात, अत्यंत पवित्र आहात. अशा रितीने त्यांनी या दोन गोष्टी सांगितल्या प्रथम म्हणजे क्षमा करा. ज्यांनी त्रास दिला त्यांना विसरा व क्षमा करा म्हणजे तुम्हाला त्रास होणार नाही दुसरी म्हणजे आत्मा तुम्ही आत्मा आहात, त्याला जाणा, ज्याला कोणी शिवू शकत नाही, त्रास देऊ शकत नाही त्याच्याशी रममाण व्हा. आत्म्याला जाणण्यासाठी तुम्हाला कुंडलिनीच्या जाग्रणाची आवश्यकता आहे. कुंडलिनी जाग्रणानंतरही तुम्ही त्यात स्थिज व्हायला पाहिजे. आतून स्थिज व्हायला पाहिजे म्हणजे आतून तुम्ही एकदम शांत होता, विचलित होत नाही. ज्या छोट्या छोट्या गोष्टींचा तुम्हाला त्रास होत होता ते सर्व नष्ट होते, तुम्ही आत्म्याचा आनंद घेऊ लागता. यासाठी कुंडलिनीच्या जाग्रणाची आवश्यकता आहे जाग्रणानंतरही लोक भटकत राहतात.

विचारात गुंततात. पण जेव्हा तुम्ही आज्ञा चक्राच्यावर जाता तेव्हा हे सर्व संपते. याबद्दल बायबलमध्येही लिहिलेले आहे म्हणूनच आज्ञा चक्राचे महत्त्व आहे, जो कपाळावर टिळा लावून येईल ते बचावेल असे म्हटले आहे. असे लोक म्हणजे सहजयोगीशिवाय कोण असेल?

कार्य प्रचंड आहे. ते बारा लोक होते. आपण तर हजारो आहात. एकेकाने जे कार्य केले त्याच्या एक सहस्रांश सुद्धा तुम्ही करू शकला नाही. आपण सर्वांनी माझ्या कार्यात हातभार लावून सर्व विश्वात त्याचा प्रचार करावा.

इंग्रजी भाषणाचा अनुवाद

मी जेव्हा परदेशात असते तेव्हा नेहमी इंग्रजीतूनच बोलते. येथे बरेच लोक हिंदी जाणतात म्हणून येथे बदल म्हणून हिंदीतून बोलते. मी लोकांना ख्रिस्तांच्या महान अवताराबद्दल सांगितले. ते एका महान कार्याकरिता आले ते म्हणजे त्यांना लोकांचे आज्ञाचक्र उघडायचे होते. फार महान कार्य होते त्याकरिता त्यांनी मोठा त्याग केला. क्रॉसवर चढले. या घडणाऱ्या घटनांची त्यांना आधी कल्पना होतीच कारण ते परमेश्वरी व्यक्तीत्व होते. सर्व त्याग करण्यात त्यांना कसलीच अडचण नव्हती, हे करण्यात. त्यांना वाटले दुसरा कोणता तरी मार्गाने लोकांचे आज्ञा चक्र उघडेल. पण त्यांना जीवनाचा त्याग करावा लागला. या त्यागातून त्यांना हे दाखवायचे होते की आपल्या क्षुद्र व उथळ जीवनातून वर यायचे असेल तर त्यागाची आवश्यकता आहे. त्याग पण कशाचा? आपल्यातील षड्रिपुंचा. पण कुंडलिनी जागणाने तुम्ही आपोआप या षड्रिपुंच्या ताबडीतून मुक्त होता. (Detached) ते तुमच्यातील कुंडलिनीच्या शक्तीवर अवलंबून आहे. जर तिचे उत्थापन व्यवस्थित झाले तर लोक एका घटकत आत्मसाक्षात्कारी झालेले पाहिले, असे थोडे लोक आहेत. बरेच लोक मी पाहिले ते समस्येतच अडकतात. विशेषतः आज्ञा चक्रांच्या. लोकांना एक सवयच होते की प्रतिक्रिया दर्शविणे. काही घडले की प्रतिक्रिया होणे, कुठल्याही बाबतीत. हे सर्व तुमच्यातील सवयीमुळे (Conditioning) किंवा अहंकारातून (Ego) होते. स्वतःच्या अहंकारामुळे आपण कोणीतरी विशेष वा उच्च आहोत असे सतत वाटते आणि कोणी काही बोलले की लगेच त्यांना सलते. हे सर्व अहंकारामुळे घडते. अहंकार हा तुमच्या आज्ञाचक्राचाच भाग आहे व दुसरा (Conditioning) पूर्वग्रह. ज्यांना सतत दुसऱ्याकडून मान घेण्याची सवय असते व एखाद्याने चुकून दुर्लक्ष केले की त्यांचा पारा चढतो. अशा अनेक क्रिया

प्रतिक्रिया हे सर्व नष्ट करण्याकरिता ख्रिस्तांनी आपल्या जीवनाचा त्याग केला. ते ईश्वरी व्यक्तीत्व होते. ते व्यक्तीत्व सागरासारखे आहे. जे शून्यस्तरांत असते. सागरामुळे दग निर्माण होऊन पाऊस पडतो व नद्या भरून वाहू लागल्या की पुन्हा समुद्राला येऊन मिळतात. असे व्यक्तीत्व. अगदी सर्वांच्या खाली म्हणजे नम्रता. नम्रता असणे हा एक सहजयोग्यांचा गुण आहे. जे नम्र नाहीत ते सहजयोगी नाहीत. काही लोक पाहिलेत ते रागावतात, ओरडू लागता? हे सहजयोगी असूच शकत नाही. अशी नम्रता तुम्हाला स्थिरता पक्केपणा देऊ शकते मग तुम्ही प्रतिक्रिया व्यक्त करत नाही. नुसते पहात राहता. अशा रितीने तुम्ही 'साक्षीत्व' मिळवता.

साक्षीत्ववृत्तीमुळे तुम्ही सृष्टीकडे पहाता पण विचार करत नाही. त्याची मजा घेता, मग त्यातून तुम्हाला आनंद मिळतो. यातून तुमच्या व्यक्तीमत्वातला आनंद प्रत्ययास येतो. आजच्या लोकांची समस्या हीच की प्रतिक्रिया दाखविणे, कोणती घटना घडू द्या वर्तमान पत्र उघडू द्या, लगेच प्रतिक्रिया बाहेर पडते. हे रोजच्या जीवनात घडते. प्रतिक्रियेतून काहीच निष्पन्न होत नाही. जर त्यातून काही घ्यायचे असेल तर तुम्ही साक्षीत्वच्या स्थितीत असणे जरूर आहे हीच आपल्याला ख्रिस्तांच्या जीवन त्यागातून शिकवण आहे. त्यांचा जन्म हाच अत्यंत हलाखीत, गरीब परिस्थितीत प्रतिकूल वातावरणात झाला. यातून हेच जाणायचे उथळ गोष्टी पोकळ भौतिकतेमुळे माणूस मोठा होत नाही. मोठेपणा आतून असावयास हवा. त्यावेळेस तुम्ही त्याचा विचारही करत नाही, कशाचीच तमा बाळगत नाही. त्यामुळेच तुमचे जीवन उज्वल होते. याप्रमाणे त्यांचे जीवन होते. त्यांना आपल्यातील श्रीमंतीचा वा गरिबीचा, कुठल्याही पदाचा व सत्तेचा विचार नव्हता. कारण ते ईश्वरी व्यक्तीत्व होते. सुरवातीला लोक जेव्हा गणपती पुढ्याला येत तेव्हा इथल्या गैरसोयीबद्दल कुरकुरत आता तसे नाही. इथे तुम्ही आपले 'साक्षीत्व' वाढवण्यासाठी येता. इथल्या सुंदर आकाशाकडे पहा. त्यांच्या रंगछटा पहा. तुसते बघत रहा. त्याची मजा घ्या. अशा आध्यात्मिक स्थितीत तुम्ही असता तेव्हा तुम्ही आनंदात, शांतीच्या स्थितीत करुणामय असता. या गोष्टींना तुम्ही केवळ आपल्या अहंकारामुळे मुक्तता. तो तुमचा मोठा शत्रू आहे. जो तुमच्या जीवनातील संपन्नता व आनंदाला अडथळा उभा करतो. त्याच्याकडे तुम्ही बघत रहा. त्याचे खेळ पहा पण त्यापासून अलग रहा साक्षीरूप रहा मग त्यांचे खेळ आपोआप संपतील. आजच्या युगाची अहंकार हीच मोठी समस्या आहे. सर्व राष्ट्रांच्या जगाच्या समस्या यामुळेच

आहेत. लोकांना त्याची उलट मजा वाटते. सहजयोगातही ही एक समस्या आहे. लोकांच्या अहंकाराबाबत कसे सांगावे? पण ही समस्या तुम्ही सहजयोगीच हाताळू शकता. एक माझे व तुमचे प्रश्न सोडविण्याचा उत्तम उपाय आहे.

माझ्या जीवनाचे एक भव्य चित्र माझ्यासमोर आहे. सर्व विश्वाला आत्मसाक्षात्कार मिळाला पाहिजे. तसा तुम्ही सर्वांनी निश्चय करा. त्याबाबत आपले आत्मपरीक्षण करा. या जगासमोर मी कोण आहे? सहजयोगात जे शिकायला मिळते सहजयोगी जे आत्मनिरीक्षण करू शकतील ते दुसऱ्यांना शक्य नाही. हा मिस्टर इगो कोण आहे? त्यासाठी तुम्ही अत्यंत नम्रतेने श्री खिस्तांचा मंत्र म्हणा, त्याची तुम्हाला मदत होईल. लोकांच्या स्तुतीला तुम्ही बळी पडू नका. बाहेरच्या जगात जे अहंकाराचे, स्पर्धाचे जे घाणेरडे साम्राज्य पसरले त्याला सामोरे जा. हे अहंकार दूर करण्याचे यश तुम्ही मिळवा, ते परम आहे. तुमचे नम्र स्वभावाचे दर्शन कायम राहील. स्वार्थी

लोकांना या जगांत कोण विचारते! लोकांनी तसे घडावे असे वाटते तर तुम्हीपण तसे आदर्श व्हा. हे जाणून तुम्ही खिस्तांच्या अवताराला, जीवनाला पूर्ण न्याय दिल्यासारखे होईल. त्यांनी ज्या तऱ्हेने अहंकाराला पार केले तो एक उत्तम आदर्श आहे. जगात काही राष्ट्रे खिस्तांचा अभिमान बाळगतात. तेच स्वतःला मोठे अहंकारी, गर्विष्ठ समजतात हे विचित्र वाटते. अशा लोकांनी नम्रता, करुणा यांचे दर्शन घडवावे, त्याचा अंगिकार करावा. म्हणून विशेषतः पाश्चात्यांनी सहजसंस्कृतीचा अंगिकार करावा तुम्ही तसे व्हाल व मग लोकांना तुमचा हेवा वाटेल. तुम्हाला मी खिसमसच्या शुभेच्छा देते. खिस्तांच्या जीवनाचा आदर्श जाणून घ्या.

ईश्वराचे तुम्हाला अनंत आशिर्वाद.

